RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

लोकतांत्रिक समाजवाद का नेहरूवादी दृष्टिकोण एवं उपादेयता

कमल सिंह

शोधार्थी – इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
जनवाद, नागरिक अधिकार, आत्मनिर्भर, भारतीय राष्ट्र, अर्थव्यवस्था, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, निर्वाचन, समाजवाद आदि।

ABSTRACT

नेहरू की समाजवाद की अवधारणा में लोकतंत्र के विचार का केन्द्रीय स्थान है, यह भी कहा जा सकता है कि लोकतंत्र उनकी समाजवादी धारणा का प्रारम्भिक बिन्दु है और अंतिम भी। वस्तुतः **लोकतंत्र एक ऐसा तथ्य है जो मावर्तवादी समाजवाद से उनके समाजवाद की भिन्नता को भी प्रकट करता है।** नेहरू ने लोकतंत्र को एक गतिशील अवधारणा तथा नैतिक जीवन–दृष्टि के रूप में स्वीकारा है। **उनकी लोकतंत्र की अवधारणा बहु–आयामी है, जो राजनीतिक लोकतंत्र से क्रमशः सामाजिक लोकतंत्र तथा आर्थिक लोकतंत्र की दिशा में विकसित होती है। नेहरू ने आर्थिक लोकतंत्र के विशिष्ठ रूप को लोकतांत्रिक समाजवाद कहा है।**

यह उल्लेखनीय है कि नेहरू ने लोकतंत्र की तरह ही अपनी समाजवाद की धारणा को भी गतिशील एवं व्यापक माना है और इसे जीवन का नैतिक दृष्टिकोण भी बताया है। लोकतंत्र के बारे में नेहरू का अग्रलिखित कथन उनकी समाजवाद की अवधारणा के पूर्णतः निकट है, "यह अवसर की समानता को उस सीमा तक सब व्यक्तियों को प्रदान करता है, जिस सीमा तक कि राजनीतिक व आर्थिक कार्यक्रम में ऐसा करना संभव हो पाता है। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ सामर्थ्य और योग्यतानुसार उच्च विकास के विचार का संयोग करता है।" **लोकतंत्र** (राजनीतिक लोकतंत्र) **तथा समाजवाद की घनिष्ठता को स्वीकारते हुए नेहरू ने बताया है कि लोकतंत्र का वास्तविक विकास समाजवाद में ही होता है।** जून 1963 में कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन में नेहरू ने कहा था, **"लोकतंत्र का अपिहार्य परिणाम समाजवाद है। राजनीतिक लोकतंत्र में यदि आर्थिक लोकतंत्र सम्मिलित नहीं है तो वह अर्थहीन है।"**

लक्ष्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र में हमने नेहरू विरासत के दो प्रमुख स्तंभ जनतंत्र और समाजवाद पर ही ध्यान फोकस करने का प्रयास किया जो आधुनिक भारत के दो प्रमुख मूल स्तम्भ है। जनतंत्र के स्वरूप के संदर्भ में नेहरू ने सदैव धर्मनिरपेक्ष राज्य की परिकल्पना की ओर एक विशाल प्रचार अभियान चलाकर अल्पसंख्यकों के बीच सुरक्षा की भावना जगाने का कार्य किया। हमने अपने शोध पत्र के माध्यम से यह साबित करने का प्रयास किया है कि जनवादी होने के बावजूद नेहरूजी ने धर्म पर आधारित राजनीतिक संस्थाओं पर रोक लगाने की वकालत की। इस संघर्ष में नेहरूजी को पटेल और राजगोपालाचारी जैसे मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

नेहरू और लोकतंत्र

जवाहरलाल नेहरू का चिंतन और उनके कार्य–कलाप इस बात के प्रतीक हैं कि वे 'महान् लोकतांत्रिक' थे। उन्हें और लोकतंत्र को हम विलग करके नहीं देख सकते। नेहरू ने लोकतंत्र को केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही, सीमित नहीं रखा, अपितु आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र को भी लोकतंत्र की परिधि में लिया। उनका कहना था कि नागरिकों को केवल राजनीति स्वतंत्रता देना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें अवसरों की समानता दी जानी चाहिए, आर्थिक विषमताओं का अन्त किया जाना चाहिए। सामाजिक रूढ़ियों और घोर आर्थिक असमानताओं से पूर्ण समाज कभी लोकतांत्रिक नहीं हो सकता। भूखे व्यक्ति के लिए कोरा मताधिकार कोई महत्व नहीं रखता। यदि समाज में ऊँच–नीच, छूत–अछूत के भेदभाव हों, दरिद्रों की कतार हो, धन का न्यायपूर्ण वितरण न हो, वर्गभेद का प्रसार हो और मुठ्ठी भर शिक्षित लोग निरक्षर जन–साधारण को अपने पैरों तले दबाए हों तो ऐसे देश या समाज में लोकतंत्र की बात करना निरर्थक है।[1]

नेहरू महात्मा गाँधी के राजनीतिक उत्तराधिकारी थे, साधनों की पवित्रता में निष्ठा रखते थे। "उन्हें सत्तावाद तथा हिंसा से घृणा थी। फासीवाद, नाजीवाद तथा कठोर नियंत्रण के साथ जिस उजड्डपन और कमीनेपन का संयोग .... है उससे उनके संवेदनशील मन को आघात पहुँचता था। वे चाहते थे कि भारत पश्चिम के उन्नत औद्योगिक राष्ट्रों के समकक्ष स्थान प्राप्त कर ले, किन्तु इस आदर्श को साक्षात्कृत करने के लिए उन्होनें अधिनायकतंत्रीय यंत्रीकृत हिंसा के सिद्धांत का परित्याग कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दीर्घ और कपटपूर्ण काल में उन्हें ब्रिटिश साम्राज्यवाद का जो अनुभव हुआ था उसने नागरिक विमुखता के प्रति उनकी परिभाषाओं तथा गंभीर अनुराग को और भी दृढ़ कर दिया था।" नेहरू को जनता से प्रेम था और इसलिए जन–सम्पर्क को वे लोकतांत्रिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा मानते थे।[2] अपने प्रधानमंत्रित्व काल में नेहरू ने अविराम यात्राओं द्वारा और अगणित सभाओं द्वारा जनता से सम्पर्क स्थापित करने की प्रणाली विकसित की। उन्होनें इस प्रकार, यह बताया कि शासकों और शासितों के मध्य निरन्तर खुला और निकट संबंध लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है। नेहरू ने जनता को निरन्तर अनुशासन और भ्रातृत्व की प्रेरणा दी। उनका उद्देश्य था कि जनता में उस सामुदायिक भावना को दृढ़ किया जाए जिसे मैकावर (Maclver) ने लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार बताया है।[3]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नेहरू लोकतंत्र को नैतिक मानदण्डों और मान्यताओं की योजना मानते थे। उन्होनें कहा था कि "मेरे विचार में गणतंत्र का अर्थ अमुक प्रकार की सरकार तथा किसी कानूनी–संस्था से कुछ अधिक है। यह आवश्यक रूप से जीवन के नैतिक मानदण्डों तथा मान्यताओं की एक योजना है। आप गणतात्रिंक हैं अथवा नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप एक व्यक्ति अथवा एक वर्ग के रूप में किस प्रकार से आचरण तथा चिंतन करते हैं। गणतंत्र के लिए अनुशासन, सहिष्णुता तथा पारस्परिक सद्‌भावना अत्यनत आवश्यक है। अपनी स्वतंत्रता के लिए दूसरों की स्वतंत्रता के प्रति आदर–भाव होना आवश्यक है। गणतंत्र में परिवर्तन पारस्परिक विचार–विमर्श तथा समझाने–बुझाने से किये जाते हैं, हिंसक उपायो से नहीं। गणतंत्र का अर्थ यदि कुछ है तो समानता है।[4] समानता केवल मत देने के लिए अधिकार की ही नहीं, बल्कि आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र की भी समानता।" पुनश्च, "मैं किसी भी मत–मतान्तर अथवा धर्म से जकड़ा हुआ नहीं हूँ, किन्तु मैं मानव की नैसर्गिक आध्यात्मिकता में विश्वास अवश्य करता हूँ – इसको कोई चाहे धर्म कहे, अथवा न कहे, मैं व्यक्ति की सहज गरिमा में पूरा विश्वास रखता हूँ। मेरा यह भी विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसन दिया जाना चाहिए। मुझे ऐसे सम–समाज में पूरा विश्वास है (एक आदर्श के रूप में इस उद्देश्य को पूरा करना हो सकता है), जिसमें अधिक भिन्नता न हो, मुझे धनी–व्यक्तियों की बेहूदगी और साथ ही निर्धनों की दरिद्रता नहीं भाती।"[5]

नेहरू के विचारों का यदि हम विश्लेषण करे तो स्पष्ट होता है कि लोकतंत्र से उनका आशय 'समाज का आत्मानुशासन' था। अपने भाषण में उन्होनें कहा कि "आप लोकतंत्र की सैकड़ों परिभाषाएँ दे सकते है, किन्तु इसकी एक परिभाषा निश्चित रूप से ही समाज का आत्मानुशासन है। ऊपर से थोपा गया अनुशासन जितना कम होगा आत्मानुशासन ही ज्यादा होगा।" समाज में आत्मानुशासन के विकास के लिए नेहरू ने शिक्षा व्यवस्था पर पूरा बल दिया। उनका विचार था कि कोई भी राजनीतिक अथवा सामाजिक व्यवस्था या संगठन तक तक सही नहीं हो सकता जब तक कि नागरिकों का मानसिक स्तर ऊँचा न उठे और उनका मानसिक स्तर समुचित शिक्षा के प्रसार से ही ऊँचा उठ सकता है।[6]

लोकतंत्रवादी होने के नाते व्यक्ति के महत्व में नेहय का विश्वास था। कूड़े–करकट के ढेर पर किसी भी व्यक्ति को नहीं फेंक देना चाहिए। उसे महत्वपूर्ण, उद्देश्यपूर्ण माना जाना चाहिए और किसी को भी – चाहे वह राज्य हो अथवा कोई संगठन – व्यक्ति को दबाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। उनका मुख्य सिद्धांत यह था कि राज्य व्यक्ति के लिए है न कि व्यक्ति राज्य के लिए। नेहरू अपने विरोधियों के विचारों के प्रति सहनशीलता और सम्मान की भावना रखते थे। उनकी दृष्टि में हठवादिता और रूढ़िवादिता की प्रवृत्ति लोकतंत्र के लिए घातक थी। लोकतंत्र तो एक गतिशील विचारधारा है समयानुकूल परिवर्तनों तथा अनन्यता के साथ–साथ लोकतंत्र का क्षेत्र भी अधिकाधिक विकसित हो जाता है। लोकतांत्रिक भावना की माँग है कि हम अपनी समस्याओं का निराकरण आपसी विचार–विमर्श, तर्क–विर्तक और शांतिपूर्ण उपायो से करें। नेहरू संसदीय सरकार को अधिक अच्छा इसीलिए समझते थे कि यह समस्याओं को हल करने का एक शांतिपूर्ण उपाय है।[7]

नेहरू का दृढ़ विश्वास था कि लोकतंत्र की बुराइयाँ ऐसी नहीं है कि जिन्हें दूर नहीं किया जा सकता। यदि उत्कृष्ट नैतिक चरित्र का पालन किया जाए तो लोकतंत्र के सफल संचालन में कोई संदेह नहीं। समाज और राष्ट्र के प्रति उसका कैसा आचरण है? नेहरू के 'लोकतांत्रिक समाजवाद' के विषय में डॉ. कुमुद शर्मा का मत है कि "समाजवाद में विश्वास के साथ–साथ नेहरू जनतंत्र में भी आस्था रखते थे और इन सबके साथ ही गाँधीजी के अहिंसात्मक साधनों के प्रति भी उनकी श्रद्धा थी। इन सबका समन्वित रूप उन्हें 'लोकतांत्रिक समाजवाद' अथवा 'समाजवादी लोकतंत्र' की विचारधारा में मिला।"[8]

समाजवाद के संबंध में नेहरू के विचार :–

नेहरू ने समाजवाद की अपनी विचारधारा विकसित की। समाजवाद के इस आदर्श सिद्धांत पर उनका आग्रह था कि आर्थिक स्वतंत्रता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता कोई मायने नहीं रखती। 1955 में अवाड़ी कॉंग्रेस अधिवेशन में उन्होनें स्पष्ट किया कि उनका समाजवाद रूसी साम्यवाद या अन्य देशों के समाजवाद का अनुकरण नहीं है। "समाज का अर्थ धन का वितरण नहीं है और न ही केवल जन कल्याणकारी राज्य का निर्माण है। समाजवादी अर्थव्यवस्था मात्र से ही लोक कल्याणकारी राज्य संभव नहीं बन सकता। आवश्यकता इस बात की है कि देश में उत्पादन बढ़ाया जाए, धन की वृद्धि हो और फिर अर्जित धन का समुचित ढंग से वितरण किया जाए।" एक अन्य स्थल पर उन्होनें कहा– संसार की तथा भारत की समस्याओं का समाधान केवल समाजवाद द्वारा ही संभव दिखाई देता है और जब मैं इस शब्द का प्रयोग करता हूँ, तब केवल मानवीय नाते से नहीं, बल्कि वैज्ञानिक आर्थिक दृष्टि से भी करता हूँ, किन्तु समाजवाद आर्थिक सिद्धांत से भी अधिक महत्वपूर्ण है। यह एक जीवन–दर्शन है और इसलिए मुझे जँचता भी है। मेरी दृष्टि में निर्धनता, चारों ओर फैली हुई बेरोजगारी, भारतीय जनता का अधःपतन तथा दासता को समाप्त करने का मार्ग समाजवाद को छोड़कर अन्य किसी प्रकार से संभव नहीं दिखता।[9]

अपनी समाजवादी अवधारणा पर चलते हुए नेहय ने नियोजित विकास के अंतर्गत मिश्रित अर्थ–व्यवस्था को प्रश्रय दिया। तीव्र आर्थिक विकास के लिए न केवल औद्योगिक विकास को गति दी वरन् कृषि और भूमि–सुधार द्वारा जमींदारों के शोषण से दबी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की चेष्टा की। उनका उद्देश्य एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करना था जो बिना व्यक्तिगत एकाधिकार तथा पूँजी के केन्द्रीयकरण के अधिकतम उत्पादन प्रदान कर सके और शहरी तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उपयुक्त संतुलन पैदा कर सके। नेहरू ने जीवन, समाज और सरकार के संबंध में समाजवाद तथा लोकतांत्रिक साधनों को संयुक्त किया और 'मध्यम मार्ग' अपनाया। उन्होनें लोकतांत्रिक साधनों के माध्यम से समाजवादी समाज की स्थापना में निष्ठा प्रकट की।[10] 1958 में 'समाजवाद' पर विचार प्रकट करते हुए उन्होनें स्पष्ट शब्दों

में कहा – "मैं उग्र प्रकार का समाजवाद नहीं चाहता जिसमें राज्य सर्वशक्ति सम्पन्न होता है और प्रायः सब कार्य–कलापों का संचालन करता है। राजनीतिक दृष्टि से राज्य बहुत शक्ति सम्पन्न होता है। अतः मैं आर्थिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण की योजना के आदर्श रूप को भारतीय जनजीवन के लिए व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करना चाहता हूँ।" अपने समाजवाद की स्थापना के लिए नेहरू बल प्रयोग या हिंसात्मक साधनों के विरूद्ध थे।[11] "हमारे सामने प्रश्न यह है कि शांतिपूर्ण तथा न्यायोचित्त उपायों से गणतंत्र और समाजवाद को एक साथ कैसे संयुक्त किया जाए। भारत के सामने यही समस्या उपस्थित है। हम इस उद्देश्य को बलपूर्वक अथवा दवाब से पूरा नहीं सकते। हमें लोगों की सद्भावना तथा सहयोग प्राप्त करना है।"

नेहरू के समाजवाद में अभावों से पीड़ित जनता के लिए करूणा थी, जीवन के सभी क्षेत्रों में भी सभी के लिए समानता की कामना थी। नेहरू जी के शब्दों में, "हमारा उद्देश्य भारत में समाजवादी समाज की स्थापना करना है।[12] हमारा उद्देश्य यह है कि भारत में प्रत्येक पुरूष, महिला तथा बच्चे को समान अवसर प्राप्त हो और बड़ी–बड़ी विषमताएँ दूर हो जाएँ। यह कोई सरल उद्देश्य नहीं है, क्योंकि इससे हमारा तात्पर्य प्रशिक्षण, शिक्षा तथा अन्य सैकड़ों उपायों से मानव का सुधार करने से है। समाजवाद इस बात पर निर्भर करता है हम किस प्रकार सोचते तथा विचारते हैं, हम अपने पड़ोसी के साथ कैसा आचरण करते हैं और मिल–जुलकर एक साथ काम करने के लिए अपनी क्षमता का किस प्रकार विकास करते हैं।"[13]

निष्कर्ष :–

स्पष्ट हैं, स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री होने के नाते नेहरू के सामने चुनौतियों भरे काम पड़े हुये थे। इसके बावजूद किसी भी ऐतिहासिक मानदण्ड से उनकी उपलब्धियाँ विशालतम अनुपात में थी। सर्वोपरि उन्होनें कुछ मूल्यों, दृष्टिकोणों, आदर्शों, लक्ष्यों और नजरिये को देश में पहचाना। उन्होनें इन्हें भारतीय जनता की सांस्कृतिक मानसिकता का अंग बना दिया। जैसे कि उनके एक जीवनीकार, ज्योफ्री टायसन ने लिखा है कि – "यदि नेहरू दूसरी तरह के आदमी होते तो भारत भी दूसरी तरह का देश होता।"

जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय राष्ट्र को सुदृढ़ किया, नागरिक अधिकार और संसदीय जनवाद पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था की नींव रखी, भारत को आत्मनिर्भर स्वतंत्र अर्थव्यवस्था के रास्ते पर खड़ा किया, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाया। उन्होनें जनता को एक समाजवादी आदर्श प्रदान किया तथा समता, समानता और समान अवसर पर आधारित एक व्यापक समाजवादी समाज के लक्ष्य को लोकप्रिय बनाया। निश्चय ही नेहरू समाजवाद बनाने में असफल रहे, पर इसमें कोई शक नहीं कि उन्होनें समाजवादी सिद्धांत में कई नए तत्वों का समावेश किया जिन्हें भविष्य में किसी जीवन्त समाजवादी आंदोलन को अपने में समाहित करना ही होगा।

वास्तव में नेहरू का हर विचार आज भी अपनी प्रासंगिकता रखता है। जवाहर लाल नेहरू अपनी पूरी जिदंगी जड़ सिद्धांतों और जड़वादी मानसिकता का विरोध करते रहे। धर्म का विरोध करने का उनका यह प्रमुख आधार था और यही जीवन और इसकी समस्याओं प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रवृत्ति के पक्षधर होने का प्रमुख आधार था। सामूहिकता की उनकी सोच और तकनीकि जरूरत पर उन्होनें जो बल दिया वह आज भी अर्थव्यवस्था को गति दे रही है। नेहरू ने हम लोगों को गर्व करने की सिर्फ वजह ही नहीं दी, दुनिया में भारत के मुकाम को लेकर एक खास नजरिया भी दिया। लेकिन अफसोस इसका है कि उनकी विरासत को संभाल के नहीं रखा जा सका। जवाहर लाल नेहरू ने हमें "भारत का विचार" दिया और वह सभी भारतीयों के लिए है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. नेहरू ऑन कम्यूनलिज्म, सम्पा.–एन.एल. गुप्ता, नई दिल्ली, 1965 पृ. 217
2. टीबोर मेण्डे : कन्वरसेशन्स विथ मि. नेहरू, लंदन 1956 पृ. 37, 108, 105
3. एस. गोपाल : जवाहर लाल नेहरू : ए बायोग्राफीलंदन, 1979 जिल्द 02 पृ. 192–93
4. सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहर लाल नेहरू, सेकेण्ड सीरीज जनरल स्डीटर, एस. गोपाल, दिल्ली, 1998 जिल्द 07 पृ. 384
5. करंजिया, आर.के. : द फिलोसोफी ऑफ मि. नेहरू, लंदन, 1966 पृ. 139
6. ज्योफ्री टायसन : नेहरू द इयर्स ऑफ पावर, लंदन, 1966 पृ. 173
7. एस. गोपाल : जवाहर लाल नेहरू : ए बायोग्राफी लंदन 1984 जिल्द 02 पृ. 200
8. जवाहर लाल नेहरू, लेटर्स टू चीफ मिनिस्टस जिल्द 04 पृ. 288
9. एस. गोपालः जवाहर लाल नेहरू : ए बायोग्राफी, लंदन 1984 जिल्द 02 पृ. 246–49
10. करंजिया, आर. के. : द माइण्ड ऑफ मि. नेहरू, लंदन 1960 पृ. 48
11. एस. गोपालः जवाहर लाल नेहरू : ए बायोग्राफी जिल्द 03 पृ. 278
12. जवाहर लाल नेहरू, लेटर्स टू चीफमिनिस्टर्स जिल्द 02 पृ. 368
13. एस. गोपाल : जवाहर लाल नेहरू : ए बायोग्राफी लंदन 1984 जिल्द 03 पृ. 170

RRIJM 2015, All Rights Reserved